

बौद्ध धर्म धम्मपद में चित्त का स्वरूप

डॉ० रवि दहिया

प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, हिन्दू कॉलेज, सोनीपत, हरयाणा, भारत।

प्रस्तावना

बौद्ध धर्म भारत की श्रमण परम्परा से निकला धर्म और दर्शन है। इसका प्रस्थापक महात्मा बुद्ध शाक्यमुनि (गौतम बुद्ध) थे। बौद्ध धर्म में तीन सम्प्रदाय हैं: हीनयान या थेखाद महायान और वज्रयान, परन्तु हीनयान बौद्ध धर्म का प्रमुख सम्प्रदाय है। यह दुनिया का चौथा सबसे बड़ा धर्म है। बौद्ध धर्म के लोग बहुत ही कर्मशील होते हैं।

दस पारमिताओं का पूर्ण पालन करने वाला बोधिसत्व कहलाता है बोधिसत्व जब दस बलों का भूमियों को प्राप्त कर लेते हैं। तब 'बुद्ध' कहलाते हैं, बुद्ध बनना ही बोधिसत्व के जीवन की पराकाष्ठा है। इस पहचान को बोधि नाम दिया गया है गौतम बुद्ध से पाई गई ज्ञानता को बोधि बोधि कहलाते हैं।

बौद्ध धर्म मात्रा सिद्धांत मूलक न होकर, मूलतः व्यवहार परक है बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के उपरान्त व्यवहार परक है। बुद्ध ने ज्ञानप्राप्ति के उपरान्त 45 वर्षों तक जो कुछ जहाँ जहाँ कहीं जो भी उपदेश दिया, वे उनके द्वारा अनुकूल एवं प्रयुक्त थे। उन्होंने सम्बोधि के क्रम में जिन्हें देखा, अनुभूत किया और जिन्हें सत्य पाया, उन्हें ही जनमानस के सम्मुख रखा। वे स्पष्ट शब्दों में कहते हैं कि किसी भी बात को परम्परा के आधार पर, शास्त्र के आधार पर या आचार्य-बुद्धि के आधार पर स्वीकार नहीं करना चाहिए, जब तक उसको व्यवहार में ना लाया जाए। जैसे एक जौहरी हीरे की परख करने के उपरान्त ही उसे हीरा मानता है। बौद्ध धर्म में सम्पूर्ण बुद्ध-वचन को तीन भागों में विभाजित किया गया है – परियत्ति, पटिपत्ति एवं पेटिवेध। परियत्ति सिद्धान्त को कहते हैं। पटिपत्ति व्यवहार है। तथा पेटिवेध ज्ञान का नाम है प्रस्तुत लेख पटिपत्ति अर्थात् प्रयोग पर आधारित है।

बौद्ध धर्म में धम्म पद के माध्यम से मानवीय जीवन से सम्बद्ध घटनाओं एवं समस्याओं का समाधान मन के द्वारा बताया गया है। इसके अनुसार सभी समस्याओं का उद्भव एवं समाधान मन के द्वारा होता है। चक्रवर्तिन स्थाविर की कथा और मट्टकण्डली की कथा के माध्यम से मन जीवन में मन की प्रधानता को दर्शाते हुए मनुष्य के सुख-दुख की उत्पत्ति का कारण मन को ही मानती है और उपदेश देते हुए भगवान ने यह गाथा कही:

मनो पुब्बय मा धम्मा मनो सेट्टस्त्रा मनोमया।

मनसा ये प्युट्टेस्त्रन आसति व। करोति वा,

ततो नं दुखमन्वेति चक्कं व वहतो पदं।।

मन सभी प्रवृत्तियों का अगुआ है मन उसका प्रधान है, वे मन से ही उत्पन्न होती है। यदि कोई दूषित मन से वचन बोलता है या पाप करता है तो दुःख: उसका अनुसरण उसी प्रकार करता है, जिस प्रकार कि चक्का गाड़ी खींचने वाले बैलों के पैर का, पुनः दूसरी कथा में कहा है –

मनो प्रब्बय मा धम्मो मनो सेट्टस्त्रां मनोमया

मनसा ये पसन्नेन भासीत वा करोति वा।

ततो नं सुखमन्वेति छाया व उनपापिनी।।2।।

मन सभी प्रवृत्तियों का अगुआ मन है, मन उसका प्रधान है, वे मन से ही उत्पन्न होती है। यदि कोई प्रसन्न (स्वच्छ) मन से वचन बोलता है या काम करता है तो सुख उसका अनुसरण उसी प्रकार करता है जिस प्रकार कि कभी साथ नहीं छोड़ने वाला छाया। अतः स्पष्ट है कि मन से सभी क्रियाओं का संचालन होता है।

बौद्ध धम्म अद्वितीय है – बौद्ध धर्म की शिक्षाओं में मन को सभी चीजों का केन्द्र बिन्दु स्वीकार किया गया है। यदि मन काबू में है तो सब काबू में है। बौद्ध धर्म के अनुसार मन ही सब भलाइयों व बुराईयों का स्रोत है। इसलिए अपने चित्त को निर्मल बनाए रखें रखना बौद्ध धर्म का सार है यदि आदमी का मन बुद्ध के अनुसार मन शुद्ध होता है तो शुद्ध वाणी बोलता है और अच्छे कार्य करता है तब सुख आदमी के पीछे हो लेता है जैसे कभी साथ ना छोड़ने वाली छाया। बुद्ध ने अपनी अपनी शिक्षाओं के मध्यम मार्ग पर बल दिया है वे कहते हैं जीवन के दो छोर हैं – एक काम भोग का जीवन, दूसरा काया क्लेश का जीवन।

बौद्ध धर्म में माना है कि व्यक्ति को दोनों अतियों से बचना चाहिए। वे मध्यम मार्ग के उपदेश थे। को धम्मपद का केन्द्र बिन्दु है। मानव और इस पृथ्वी पर रहते हुए मानव का मानव के प्रति छाया कर्तव्य होना चाहिए। यही बौद्ध धर्म की पहली स्थापना है।

उनकी दूसरी स्थापना है कि आदमी दुःखी है, कष्ट में है और दरिद्रता का जीवन व्यतीत कर रहा है। संसार दुःख से भरा पड़ा है धर्म का उद्देश्य इस दुःख का नाश करना ही है इसके अतिरिक्त सद्धर्म और कुछ भी नहीं है।

बौद्ध धर्म धम्मपद में कहा है कि हमारे मन में अच्छे संकल्प होने चाहिए हमारे कर्म सम्यक होने चाहिए दूसरे व्यक्ति को उनसे कोई कष्ट नहीं होना चाहिए। तथा इसी के साथ हमारी वाणी सम्यक होनी चाहिए। उसे सुनकर किसी दूसरे मनुष्य को कष्ट नहीं होना चाहिए। जो मनुष्य काय से संयत, वाणी से संयत और मन से संयत रहते हैं वे मनुष्य ही पूर्ण रूप से संयत हैं। धम्मपद में कहा गया है।

कायने संवुता धीरा अथो वायाय संवता।

मनसा संबुता धीरा ते वे सुपरि संवता।।

बौद्ध धर्म में जिन नियमों को आवश्यक माना है, वे पंचशील के नाम से प्रसिद्ध हैं। पंचशील के बिना व्यक्ति को बौद्धधर्म में दीक्षित होने का अधिकार नहीं है। पापों का क्षय, पुण्य का संचय, तथा चित्त की परिशुद्धि ही 'शील' शब्द का अर्थ है कि शील में मन, वाणी और शरीर स्वस्थ रहते हैं। जो जीव हिंसा करता है, झूठ बोलता है, चोरी करता है, परस्त्री गमन करता है, शराब-दारु पीता है वह इस संसार में अपनी जड़ ही खोदता है। शील के आधार से आत्मस्थिरता होती है। वैरागिन, लूटपाट अस्थिरता आदि का कारण दुःखशीलता है अतः बौद्ध के लिए पंचशील पालन अति आवश्यक है। धम्मपद में पंचशील की महता के विषय में कहा गया है।

यो पाणमति पातेति गुसावदअंय भासीत।

लोक आदित्त्वं आदियति परदारअंय गच्छति।।

सुरोगेरपयानअंय यो नशे अनुयूज्जीत ।
इधेवंमेसो लोभस्मिं मूलं खनति अतना ॥

इस प्रकार बौद्ध धर्म में धम्मपद अद्वितीय है। धम्मपद में मानवीय मूल्यों की ओर अग्रसर होने में मन की भूमिका अत्यधिक सार्थक एवं सकारात्मक होती है चित, (मन) कुशल हुआ तो वह नैतिक शुभ मंगल व कुशल कर्मों का सम्पादन करेगा यदि (चित) मन अकुशल हुआ तो वह अनैतिक, अकुशल कर्म करेगा। इस सिद्धांत की स्थापना में बुद्ध ने मानवीय गरिमा की स्थापना ही नहीं की वरन् स्वातन्त्र संकल्प के सिद्धांत की स्थापना की, और यह विश्वास स्थापित किया है कि धम्मपद के अन्तर्गत वर्णित मूल्य योवना के अनुशीलन एवं अभ्यास से वैज्ञानिक दृष्टि से उत्पन्न करना नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की ओर त्रिव से अग्रसर किया जा सकता है। इसका बड़ा कारण मूर्खता और नैतिकता एवं प्रज्ञा और नैतिकता में उच्चकोटि का सकारात्मक सह, संबंध है, जिसके स्थापित होने में समाज और देश सशक्त धार्मिक एवं नैतिक बन सकेगा और अतः स्पष्ट है कि मन से सभी क्रियाओं का संचालन होता है चित को निर्मल बनाए रखना ही बौद्ध धर्म का सार है।

संदर्भ ग्रंथ

1. भिक्खु धर्म रक्षित द्वारा रचित धम्मपद – पृष्ठ – 5
2. भिक्खु धर्म रक्षित द्वारा रचित धम्मपद – पृष्ठ – 6
3. धर्मानन्द कोसन्नी भगवान बुद्ध जीवन और दर्शन, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद, 2009 पृष्ठ – 101
4. भिक्खु धर्म रक्षित द्वारा रचित धम्मपद – पृष्ठ – 129
5. भिक्खु धर्म रक्षित द्वारा रचित धम्मपद – पृष्ठ – 134